दिनांक 10-02-1975 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

सर्व शक्तियों-सहित सेवा में समर्पण

ज्ञानी योगी आत्माओं का संगठन बहुत निराला
ये संगठन बापदादा और विश्व को लुभाने वाला

ज्ञानी और योगी तूँ आत्मा खुद को तुम बनाओ
भक्ति मार्ग में गायन और पूजन योग्य कहलाओ

गुण सम्पन्न के बदले सर्वगुण सम्पन्न बन जाओ
केवल कल्याण नहीं विश्व कल्याण करते जाओ

साक्षात्कार मूरत बनने की विधि बाप सिखलाते
सर्व के सत्कारी और उपकारी ही ऐसा बन पाते

तीन शक्तियां आत्मा की मन बुद्धि और संस्कार
इन तीनों पर रखो हमेशा तुम पूरा ही अधिकार

व्यक्त भाव से परे अव्यक्त भाव की स्टेज पाओ
बाप से मिली प्रॉपर्टी पर पूरा अधिकार जमाओ

जरूरत अनुसार हर शक्ति को उपयोग में लाओ
यही युक्ति अपनाकर सर्व अधिकारी कहलाओ

गुणों का दान करके औरों को गुणवान बनाओ
अपने गुणों का रंग अन्य आत्माओं पर चढ़ाओ

अवगुण ना देखकर निर्बल को बलवान बनाओ
सर्व का सत्कार करते हुए अपना भाग्य बनाओ

त्यागमूर्त बनकर सेवा का प्रत्यक्ष फल निकालो
बापदादा को सौंप सको ऐसा गुलदस्ता बना लो